



Mrs.Pooja Patel

17 Oct 1996

06:00 AM

Satna

Model: Web-MyKundli

Order No: 121312001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 16-17/10/1996
दिन _____: बुध-गुरुवार
जन्म समय _____: 06:00:00 घंटे
इष्ट _____: 59:46:56 घटी
स्थान _____: Satna
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:33:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:06:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 05:53:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:28 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:36:31 घंटे
सूर्योदय _____: 06:05:13 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:38:58 घंटे
दिनमान _____: 11:33:45 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 00:06:24 तुला
लग्न के अंश _____: 28:02:47 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: शोभन
करण _____: बालव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: यी-यीशा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	आश्विन	25
पंजाबी	संवत : 2053	कार्तिक	2
बंगाली	सन् : 1403	आश्विन	31
तमिल	संवत : 2053	आइपसी	1
केरल	कोल्लम : 1172	तुलम	1
नेपाली	संवत : 2053	कार्तिक	1
चैत्रादि	संवत : 2053	आश्विन	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2053	आश्विन	शुक्ल 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:46:46
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:08:17 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सौभाग्य
योग समाप्ति काल _____ : 27:47:12 घंटे
जन्म योग _____ : शोभन
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 06:22:50 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 34:39:18
भभोग _____ : 58:11:19
भोग्य दशा काल _____ : बुध 6 वर्ष 10 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

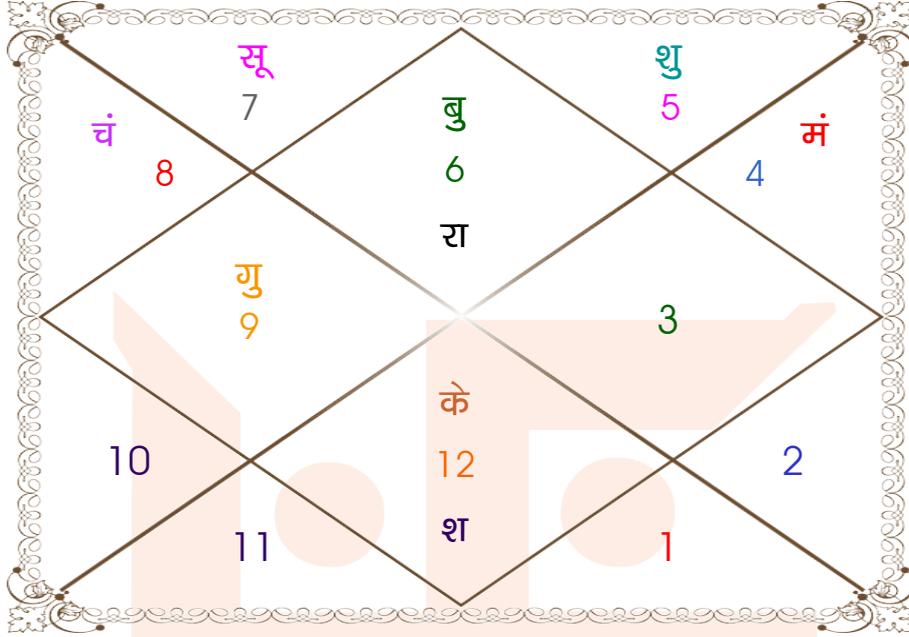
Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

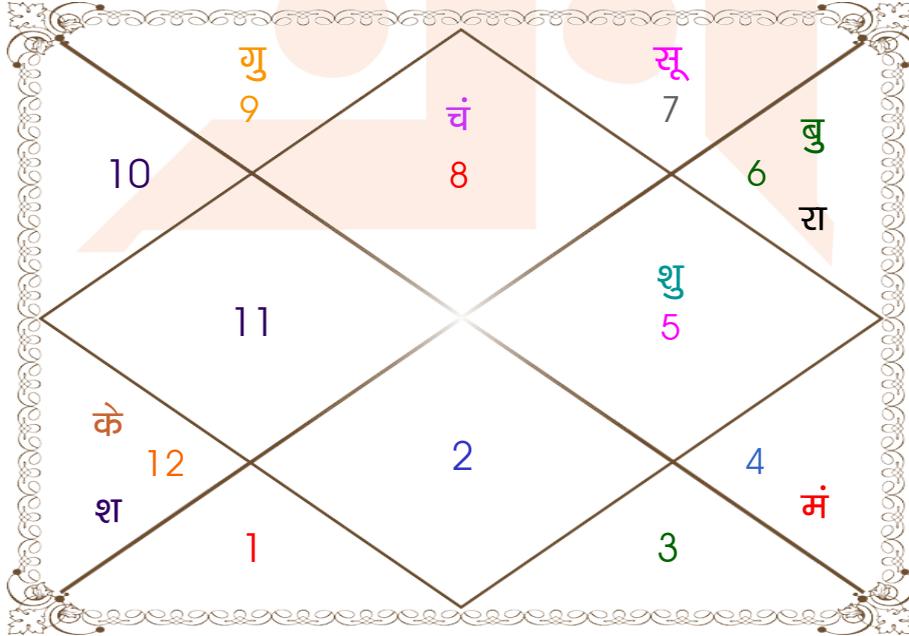
shailu.sikdar1990@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के श			
			मं
			शु
गु	चं	सू	रा ल बु

लग्न कुण्डली

		के श
मं		
शु		गु
रा बु	सू	चं

विंशोत्तरी
बुध 6वर्ष 10मा 24दि
बुध

17/10/1996

12/09/2106

बुध	12/09/2003
केतु	11/09/2010
शुक्र	11/09/2030
सूर्य	11/09/2036
चन्द्र	11/09/2046
मंगल	11/09/2053
राहु	12/09/2071
गुरु	12/09/2087
शनि	12/09/2106

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 0मा 10दि
भामरी

28/10/2025

28/10/2029

भामरी	08/04/2026
भद्रिका	28/10/2026
उल्का	29/06/2027
सिद्धा	08/04/2028
संकटा	26/02/2029
मंगला	08/04/2029
पिंगला	28/06/2029
धान्या	28/10/2029

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

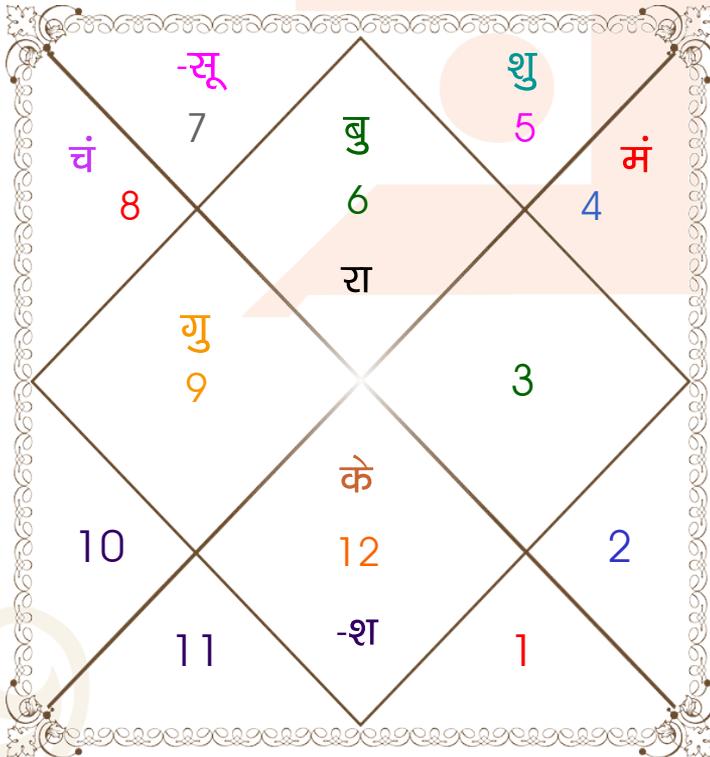
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	28:02:47	324:20:21	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	---
सूर्य			तुला	00:06:24	00:59:33	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	नीच राशि
चंद्र			वृश्चि	24:35:13	13:45:58	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	नीच राशि
मंगल			कर्क	28:39:24	00:34:42	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	नीच राशि
बुध			कन्या	19:07:08	01:42:34	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
गुरु			धनु	16:51:37	00:07:32	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	स्वराशि
शुक्र			सिंह	21:16:07	01:11:04	पूर्वाफाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	08:37:57	00:04:10	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कन्या	14:06:49	00:01:54	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	14:06:49	00:01:54	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष			मक	06:51:01	00:00:22	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	बुध	---
नेप			मक	01:11:39	00:00:21	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	07:43:31	00:01:59	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	---
दशम भाव			मिथु	28:31:41	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	शुक्र	--

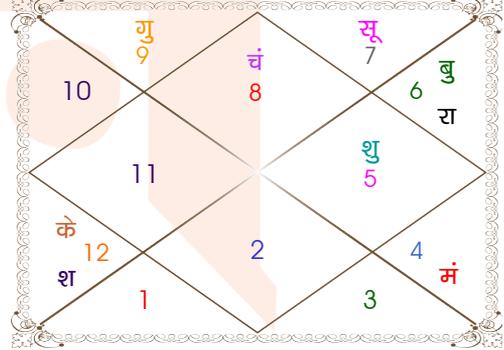
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:45

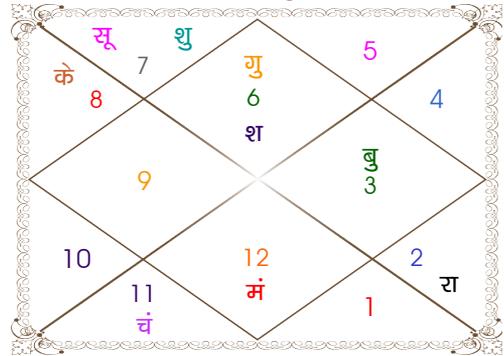
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 13:07:36	कन्या 28:02:47
2	तुला 13:07:36	तुला 28:12:25
3	वृश्चिक 13:17:14	वृश्चिक 28:22:03
4	धनु 13:26:52	धनु 28:31:41
5	मकर 13:26:52	मकर 28:22:03
6	कुम्भ 13:17:14	कुम्भ 28:12:25
7	मीन 13:07:36	मीन 28:02:47
8	मेष 13:07:36	मेष 28:12:25
9	वृष 13:17:14	वृष 28:22:03
10	मिथुन 13:26:52	मिथुन 28:31:41
11	कर्क 13:26:52	कर्क 28:22:03
12	सिंह 13:17:14	सिंह 28:12:25

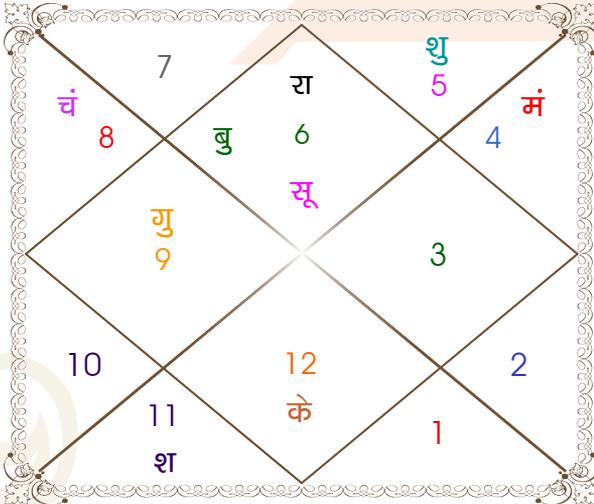
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	28:02:47
2	तुला	27:04:06
3	वृश्चिक	27:20:39
4	धनु	28:31:41
5	कुम्भ	00:06:26
6	मीन	00:32:12
7	मीन	28:02:47
8	मेष	27:04:06
9	वृष	27:20:39
10	मिथुन	28:31:41
11	सिंह	00:06:26
12	कन्या	00:32:12

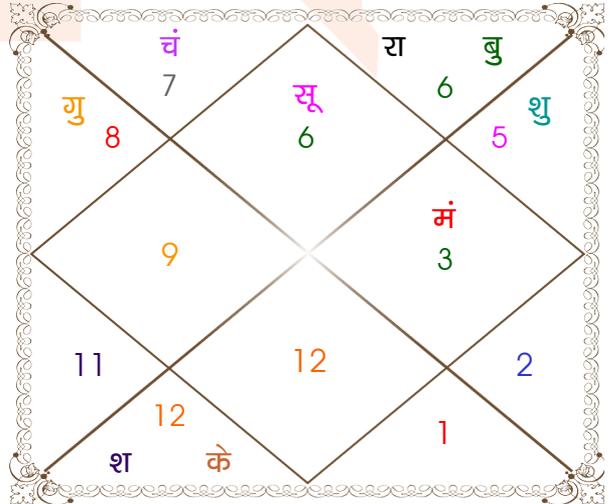
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 10 मास 24 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
17/10/1996	12/09/2003	11/09/2010	11/09/2030	11/09/2036
12/09/2003	11/09/2010	11/09/2030	11/09/2036	11/09/2046
00/00/0000	केतु 08/02/2004	शुक्र 11/01/2014	सूर्य 30/12/2030	चंद्र 12/07/2037
00/00/0000	शुक्र 09/04/2005	सूर्य 11/01/2015	चंद्र 01/07/2031	मंगल 10/02/2038
00/00/0000	सूर्य 15/08/2005	चंद्र 11/09/2016	मंगल 05/11/2031	राहु 12/08/2039
00/00/0000	चंद्र 16/03/2006	मंगल 11/11/2017	राहु 29/09/2032	गुरु 11/12/2040
00/00/0000	मंगल 12/08/2006	राहु 11/11/2020	गुरु 18/07/2033	शनि 12/07/2042
17/10/1996	राहु 30/08/2007	गुरु 13/07/2023	शनि 30/06/2034	बुध 12/12/2043
राहु 27/09/1998	गुरु 05/08/2008	शनि 11/09/2026	बुध 07/05/2035	केतु 12/07/2044
गुरु 01/01/2001	शनि 14/09/2009	बुध 12/07/2029	केतु 12/09/2035	शुक्र 13/03/2046
शनि 12/09/2003	बुध 11/09/2010	केतु 11/09/2030	शुक्र 11/09/2036	सूर्य 11/09/2046

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
11/09/2046	11/09/2053	12/09/2071	12/09/2087	12/09/2106
11/09/2053	12/09/2071	12/09/2087	12/09/2106	00/00/0000
मंगल 07/02/2047	राहु 24/05/2056	गुरु 30/10/2073	शनि 14/09/2090	बुध 08/02/2109
राहु 26/02/2048	गुरु 18/10/2058	शनि 12/05/2076	बुध 24/05/2093	केतु 05/02/2110
गुरु 01/02/2049	शनि 24/08/2061	बुध 18/08/2078	केतु 03/07/2094	शुक्र 06/12/2112
शनि 13/03/2050	बुध 12/03/2064	केतु 25/07/2079	शुक्र 02/09/2097	सूर्य 12/10/2113
बुध 10/03/2051	केतु 31/03/2065	शुक्र 25/03/2082	सूर्य 15/08/2098	चंद्र 14/03/2115
केतु 06/08/2051	शुक्र 30/03/2068	सूर्य 11/01/2083	चंद्र 16/03/2100	मंगल 10/03/2116
शुक्र 05/10/2052	सूर्य 22/02/2069	चंद्र 12/05/2084	मंगल 25/04/2101	राहु 18/10/2116
सूर्य 10/02/2053	चंद्र 24/08/2070	मंगल 18/04/2085	राहु 01/03/2104	00/00/0000
चंद्र 11/09/2053	मंगल 12/09/2071	राहु 12/09/2087	गुरु 12/09/2106	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 6 वर्ष 10 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि 13/07/2023 11/09/2026	शुक्र - बुध 11/09/2026 12/07/2029	शुक्र - केतु 12/07/2029 11/09/2030	सूर्य - सूर्य 11/09/2030 30/12/2030	सूर्य - चंद्र 30/12/2030 01/07/2031
शनि 12/01/2024 बुध 24/06/2024 केतु 30/08/2024 शुक्र 11/03/2025 सूर्य 08/05/2025 चंद्र 12/08/2025 मंगल 19/10/2025 राहु 10/04/2026 गुरु 11/09/2026	बुध 05/02/2027 केतु 06/04/2027 शुक्र 26/09/2027 सूर्य 17/11/2027 चंद्र 11/02/2028 मंगल 11/04/2028 राहु 13/09/2028 गुरु 29/01/2029 शनि 12/07/2029	केतु 06/08/2029 शुक्र 16/10/2029 सूर्य 06/11/2029 चंद्र 12/12/2029 मंगल 06/01/2030 राहु 11/03/2030 गुरु 06/05/2030 शनि 13/07/2030 बुध 11/09/2030	सूर्य 17/09/2030 चंद्र 26/09/2030 मंगल 02/10/2030 राहु 19/10/2030 गुरु 02/11/2030 शनि 20/11/2030 बुध 05/12/2030 केतु 12/12/2030 शुक्र 30/12/2030	चंद्र 14/01/2031 मंगल 25/01/2031 राहु 21/02/2031 गुरु 17/03/2031 शनि 15/04/2031 बुध 11/05/2031 केतु 22/05/2031 शुक्र 21/06/2031 सूर्य 01/07/2031
सूर्य - मंगल 01/07/2031 05/11/2031	सूर्य - राहु 05/11/2031 29/09/2032	सूर्य - गुरु 29/09/2032 18/07/2033	सूर्य - शनि 18/07/2033 30/06/2034	सूर्य - बुध 30/06/2034 07/05/2035
मंगल 08/07/2031 राहु 27/07/2031 गुरु 13/08/2031 शनि 02/09/2031 बुध 21/09/2031 केतु 28/09/2031 शुक्र 19/10/2031 सूर्य 26/10/2031 चंद्र 05/11/2031	राहु 25/12/2031 गुरु 06/02/2032 शनि 30/03/2032 बुध 15/05/2032 केतु 03/06/2032 शुक्र 28/07/2032 सूर्य 13/08/2032 चंद्र 10/09/2032 मंगल 29/09/2032	गुरु 07/11/2032 शनि 23/12/2032 बुध 03/02/2033 केतु 20/02/2033 शुक्र 09/04/2033 सूर्य 24/04/2033 चंद्र 18/05/2033 मंगल 04/06/2033 राहु 18/07/2033	शनि 11/09/2033 बुध 30/10/2033 केतु 20/11/2033 शुक्र 16/01/2034 सूर्य 03/02/2034 चंद्र 04/03/2034 मंगल 24/03/2034 राहु 15/05/2034 गुरु 30/06/2034	बुध 13/08/2034 केतु 31/08/2034 शुक्र 22/10/2034 सूर्य 07/11/2034 चंद्र 02/12/2034 मंगल 21/12/2034 राहु 05/02/2035 गुरु 19/03/2035 शनि 07/05/2035
सूर्य - केतु 07/05/2035 12/09/2035	सूर्य - शुक्र 12/09/2035 11/09/2036	चंद्र - चंद्र 11/09/2036 12/07/2037	चंद्र - मंगल 12/07/2037 10/02/2038	चंद्र - राहु 10/02/2038 12/08/2039
केतु 14/05/2035 शुक्र 04/06/2035 सूर्य 11/06/2035 चंद्र 22/06/2035 मंगल 29/06/2035 राहु 18/07/2035 गुरु 04/08/2035 शनि 24/08/2035 बुध 12/09/2035	शुक्र 11/11/2035 सूर्य 30/11/2035 चंद्र 30/12/2035 मंगल 20/01/2036 राहु 15/03/2036 गुरु 03/05/2036 शनि 30/06/2036 बुध 20/08/2036 केतु 11/09/2036	चंद्र 06/10/2036 मंगल 24/10/2036 राहु 09/12/2036 गुरु 18/01/2037 शनि 07/03/2037 बुध 19/04/2037 केतु 07/05/2037 शुक्र 27/06/2037 सूर्य 12/07/2037	मंगल 25/07/2037 राहु 26/08/2037 गुरु 23/09/2037 शनि 27/10/2037 बुध 26/11/2037 केतु 08/12/2037 शुक्र 13/01/2038 सूर्य 23/01/2038 चंद्र 10/02/2038	राहु 03/05/2038 गुरु 15/07/2038 शनि 10/10/2038 बुध 27/12/2038 केतु 28/01/2039 शुक्र 29/04/2039 सूर्य 27/05/2039 चंद्र 11/07/2039 मंगल 12/08/2039

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

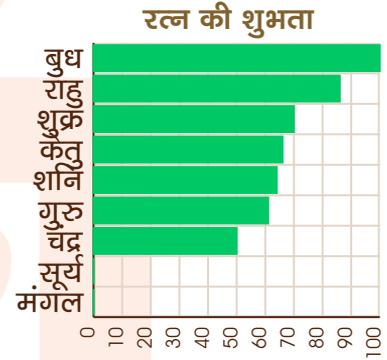
मूलांक	8
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 2, 8, 7
शत्रु अंक	3, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	86%	स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	70%	कम खर्च, भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	66%	दम्पति, सुख
नीलम	शनि	64%	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	61%	सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	50%	पराक्रम, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	12/09/2003	12%	25%	0%	100%	61%	77%	64%	86%	66%
केतु	11/09/2010	0%	25%	0%	100%	61%	77%	52%	74%	78%
शुक्र	11/09/2030	0%	25%	0%	100%	61%	83%	70%	93%	72%
सूर्य	11/09/2036	25%	56%	0%	100%	67%	58%	52%	74%	53%
चंद्र	11/09/2046	12%	62%	0%	100%	61%	70%	64%	74%	53%
मंगल	11/09/2053	12%	56%	6%	100%	67%	70%	64%	74%	72%
राहु	12/09/2071	0%	25%	0%	100%	61%	77%	70%	99%	53%
गुरु	12/09/2087	12%	56%	0%	100%	73%	58%	64%	86%	66%
शनि	12/09/2106	0%	25%	0%	100%	61%	77%	77%	93%	53%

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है। यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जिससे धनऐश्वर्य से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। जीवन में जमीन जायदाद से भी आपको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से नित्य लाभ होता रहेगा तथा इसके कय विकय से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी। सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही किसी विशिष्ट सम्मान भी आपको प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदाकदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद या तनाव भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्प ही रहेगा। वाणी से भी आप यदा कदा कठोरता का प्रदर्शन करेंगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में भी न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से आप युक्त रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग भी सामान्य ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी समय समय पर लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकद्दमें या चुनाव आदि में भी आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। लेकिन शरीर में यदा कदा गर्मी या पित आदि से कोई परेशानी हो सकती है। परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मामा आदि से भी सुख सहयोग की न्यूनता रहेगी परन्तु आपका सामान्य जीवन सुखी रहेगा।

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों को आधुनिक सुख सुविधा प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगी एवं इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। साथ ही पारिवारिक जनों से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।



Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्चल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान्, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक,

मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- शुक्र
(11/09/2010 - 11/09/2030)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 11/09/2010 को आरम्भ और 11/09/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बारीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होंगे। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(13/07/2023 - 11/09/2026)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/09/2010 को प्रारंभ हुई थी और वद 11/09/2030 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 13/07/2023 को प्रारंभ होकर 11/09/2026 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरों का परिचायक है।

सप्तम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 9, 1, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको विदेश से सम्मान प्राप्त हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है या विदेश में निवास हो सकता है। आप जीवनसाथी द्वारा निर्देशित रह सकते हैं। नीतिपूर्ण और उद्यमी होंगे। कान के रोगों से बचाव करें। शनि यद्यपि शुभफल देने में देरी करता है मगर यह जातक को धैर्यवान और सहिष्णु बनाता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा :

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(11/09/2026 - 12/07/2029)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/09/2010 को प्रारंभ हुई थी और वद 11/09/2030 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 11/09/2026 जो आपके लिए 12/07/2029 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

प्रथम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

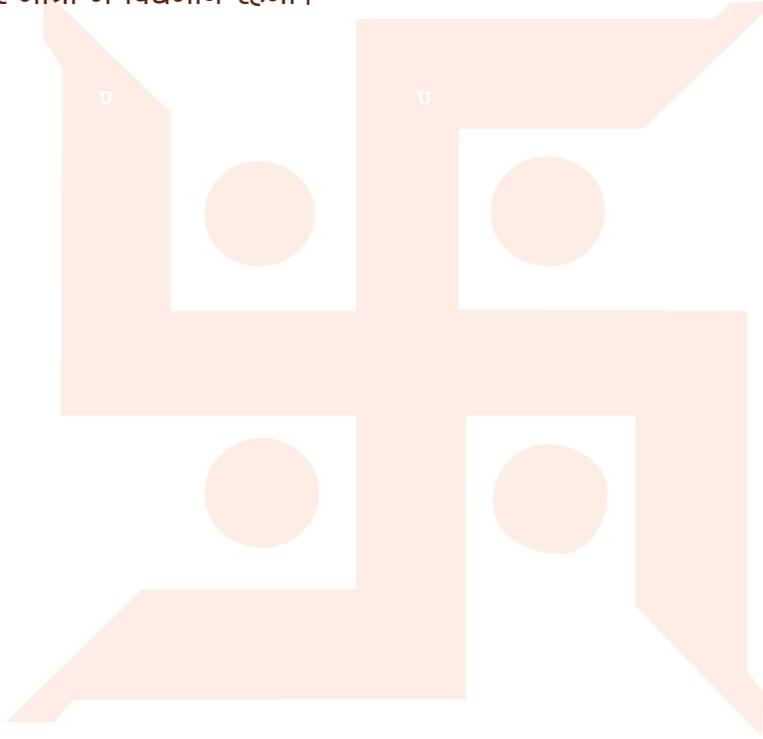
इस अवधि में आप ज्ञानवान होंगे। ज्ञान में वृद्धि के लिए फिर से अध्ययन प्रारंभ कर सकते हैं। मानसिक उत्कृष्टता और हाज़िर जवाबी में वृद्धि होगी। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

महादशा :- सूर्य
(11/09/2030 - 11/09/2036)

सूर्य की महादशा 11/09/2030 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 11/09/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। सूर्य सम्पत्ति, दृष्टि परिवार, प्रभुत्व तथा पिता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वितीय भाव दृष्टि, परिवार (कुटुम्ब) तथा सम्पत्ति का द्योतक है। अतः इस दशा में आप सम्पत्ति, सम्मान, ख्याति, शक्ति तथा प्रभुत्व प्राप्त करेंगे। आपके अनेक मित्र होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप नेत्र-रोग तथा दाँत की समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं किन्तु ये रोग क्षणिक हैं। इस महा दशा में आपमें ऊर्जस्विता और शक्ति प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी।



Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com

अर्थ :

धन की प्राप्ति के लिये, खासकर सरकारी धन की प्राप्ति के लिए, यह दशा उत्तम है। आप धनी होंगे ओर धीरे-धीरे जीवन में सुदृढ़ स्थिति प्राप्त कर लेंगे। ताम्बे, सोने तथा अन्य धातुओं के व्यापार से धन-लाभ का अच्छा अवसर आपको प्राप्त होगा। आप स्वभाव से उदार हैं, जिससे आपको धन संग्रह में रुकावट आएगी। किन्तु, सिंह राशि में होने के कारण आपकी आमदनी स्थायी होगी। आप भूमि और सम्पत्ति के स्वामी हो सकते हैं।

व्यवसाय :

आपको सरकार से अधिकार, सम्मान तथा आदर प्राप्त होंगे। आप शक्तिशाली तथा स्वतंत्र हैं, और आप में नेतृत्व-क्षमता विद्यमान है। किसी के अधीन कार्य करना आपके लिये कठिन होगा। आप नेतृत्व का कार्य बखूबी करेंगे। आपमें आत्मविश्वास और जोखिम उठाने की क्षमता विद्यमान है। आप प्रशासकीय कार्यों के सम्पादन में प्रवीण होंगे। आपकी राजनीति में दिलचस्पी होगी। आपको सरकार तथा सम्भ्रान्त व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सोने और रत्नों का व्यवसाय कर सकते हैं और यदि नौकरीपेशा हों तो सम्पत्ति के रक्षक या वित्त, लेखा अथवा प्रशासन के प्रभारी पदधिकारी हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा, उनकी पदोन्नति होगी और कार्य-स्थान में एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिलेगा। आपको अतिरिक्त आर्थिक लाभ हो सकता है। विधिवेत्ता, चिकित्सक तथा ज्योतिषी क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त हैं।

कुटुम्ब :

आपको सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आप स्वभाव से सामाजिक हैं इसलिये आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी। आपको आपके परिवार से सुख मिलेगा। आप अत्यंत आशावादी तथा उत्साही होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होंगे और आपकी प्रवृत्ति साहसी होगी। आपकी माता के लिये यह समय हर तरह से लाभदयक है। आपके पिता की कार्य-क्षेत्र में स्थिति अनुकूल होगी ओर वह अपने प्रतिद्वन्द्वियों को अचम्भित करने में सक्षम होंगे। आपके छोटे भाई-बहन की यात्रा होगी, उनका धन व्यय होगा और वे विदेश यात्रा पर भी जा सकते हैं। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उच्च कोटि की तथा शैक्षिक वृत्ति उत्तम होगी। आप वाद-विवादों, भाषण-कला तथा प्रतियोगिताओं आदि में सफल होंगे। आप भौतिकी, विद्युत-अभियन्त्रण, औषधि आदि से सम्बन्धित कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित कर सकते हैं।

अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(11/09/2030 - 30/12/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 11/09/2030 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 30/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप स्वयं के पुरुषार्थ द्वारा धन का संचय करेंगे। भौतिक सुख साधनों और विलासिता के उपकरणों का संचय करेंगे। सरकार और अधिकारीगणों से लाभ प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान में आपकी प्रतिभा और रुचि में वृद्धि होगी। विज्ञान से संबंधित कार्य से जुड़ने की संभावना है। शत्रुओं पर तर्कशक्ति से विजय प्राप्त होगी क्योंकि आप वाक्शक्ति के धनी हैं।

आपको आशा से अधिक धन प्राप्त हो सकता है। जीवनसाथी के परिवार से मतभेद की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। नौकरी में लगे व्यक्तियों के लिए समय भाग्यशाली रहेगा। व्यापारी और बुद्धिजीवी समृद्ध बनेंगे। संतान के लिए यह भाग्यशाली समय है। वे शिक्षा में खूब उन्नति करेंगे। धन कमाने में किस्मत साथ देगी, मगर उदार प्रकृति के कारण खुलकर खर्च भी करेंगे।

माता के लिए समय लाभप्रद रहेगा। जायदाद से पर्याप्त लाभ होगा।

आखों के रोग और गले की खराश के विरुद्ध सावधानी आवश्यक है। छोटे-मोटे कष्टों से बचाव के लिए लाल वस्त्र, लाल चंदन, गेहूं और घी का दान रविवार के दिन करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - चन्द्र
(30/12/2030 - 01/07/2031)

आपकी सूर्य की महादशा 11/09/2030 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 01/07/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपको धन, उच्चपद और सत्ता की प्राप्ति होगी। परिश्रम द्वारा संपदा अर्जित होगी। सुख-सुविधाओं से संपन्न रहेंगे। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं होंगी।

आपके लेखन, ज्ञान और प्रकाशनों से जनमानस प्रभावित होगा। उच्च शिक्षा से लाभ मिलेगा।

संतान से खुशियां मिलेंगी। खेलकूद, जोखिम भरे कार्य और नाटकों में रुचि रहेगी। आप में कुछ बेचैनी की प्रवृत्ति रहेगी और आप परिवर्तन के इच्छुक रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। मामा के जीवन में उत्थान आएगा। माता के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पिता के

व्यवसाय और भागीदारी में प्रगति होगी। प्रतिद्वंद्वियों के साथ आपको निडर होकर व्यवहार करना चाहिए।

आपको गले, छाती और स्नायुतंत्र के रोगों के विरुद्ध सावधान रहना चाहिए। अत्यधिक परिश्रम नहीं करें। शुभत्व में वृद्धि हेतु सोमवार को व्रत करें और सफेद वस्तुओं का दान करें।



Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)

Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewellers Satna (M.P.)

78369 55710

shailu.sikdar1990@gmail.com